29–4–67 ओमशांति रात्रीक्लास

यह है ज्ञान मार्ग। दुनियां में है भक्तिमार्ग। रावण की गवर्मेंट है ही भक्ति की। भक्ति माना दुर्गति। तुम कहीं भी जाकर सुनो सब भक्ति ही भक्ति है। ज्ञान सुनाने वाला ज्ञान का सागर बाप एक ही है। पतित–पावन भी वो ही है। अब यह किसको पता नहीं है। इसमें बड़ी मुश्किल बात यह है कि सभी देह के सम्बंधियों को भूलना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। और सबकी याद छोड़नी है। बाप को याद करने का पुरुषार्थ करना है। गुप्त मेहनत ही यह है। एक को याद करना है। काम–काज करते पिया ससुर घर देखते बुद्धि में यह है कि अब यह विनाश होना है। अकेले आये थे, अकेले जाना है। (अंत) समय बाप को जो सिमरे ऐसे चिंतन में जो मरे.....वो मुक्ति–जीवनमुक्ति पावे। बच्चे जानते हैं अब नाटक पूरा होता है। सबको घर जाना है। विनाश के बाद फिर यही राजधानी होगी। इसमें याद की मेहनत बहुत है। बुद्धि में है कि यह सभी पार्टधारी मरे पड़े हैं। उनसे अब क्या दिल लगानी है। सन्यासियों को गीता उठाने का हुक्म नहीं है। गीता है सब शास्त्रों का माई–बाप। बाकी है रचना। उनसे तो वर्सा मिलना नहीं है। गीता भी है झूठी। भक्तिमार्ग में कोई भी मुक्ति–जीवनमुक्ति दे नहीं सकते हैं। तुमसे अब भक्ति होगी नहीं। यह तो हम बन रहे हैं। पुजारी से पूज्य बन रहे हैं। यह है सच्ची कमाई जो ही साथ ले जानी है। जितनी2 धारणा करेंगे। हम आत्माएं पहले सतोप्रधान थीं। फिर रजो ,तमो में आए हैं। कोई नई आत्मा आती है तो इतनी ताकत नहीं होती। बस आये और यह लो गये। एक दो जन्म का पार्ट है। अब बाप कहते हैं पुरानी दुनियां से वैराग चाहिए। जितना बेहद के बाप को याद करेंगे उतना ही खाद निकलती जावेगी। इस मृत्युलोक में तुम्हारा अंतिम जन्म है। मैं आया ही हूँ अमरकथा सुनाने। अब अमरपुरी में चलना है। अमरपुरी शांतिधाम को नहीं कहेंगे। वहां तो सब आत्माएं रहती हैं। निराकारी दुनियां है ना। (फिर) लीन होने की बात ही नहीं होती। वो है भक्तिमार्ग की बातें। ज्ञान तो सिर्फ तुम्हीं संगमयुगी ब्राह्मण पाते हो। यज्ञ सदैव ब्राह्मण ही रचते हैं। बेहद के बाप शिव के यज्ञ में कोई विकारी ब्राह्मण हो ना सके। इंद्र की सभा में कोई विकारी आया तो (पिण्ड पंड) हो गया। यहां विकारी को तो आकर बैठना भी नहीं है। यह ईश्वरीय सभा है। इसमें छिपकर बैठेंगे तो और ही धोखा खावेंगे। पत्थर बुद्धि बन जावेंगे। बोलो यह प्रदर्शनी आदि सभी ज्ञान से ताल्लुक रखती है ना कि भक्ति से। कान में पूरा मंत्र दो। शिवबाबा कहते हैं कि मैं पतित–पावन आया हुआ हूँ तुमको पावन बनाने। अब पवित्र बनना है। दैवी गुण धारण करने हैं। विकारों को छोड़ना है। तुम शूद्र थे तो राहू का ग्रहण था। अब फिर ब्रहस्पत की दशा बैठी है। इस दशा में भी नीचे–उपर होते हैं। कोई को शुक्र की दशा ,कोई को राहू की दशा,कोई को क्या दशा आ जाती है। मनुष्य मात्र सब याद करते हैं हे पतित–पावन आओ। तो कोई भी पावन नहीं है ना। बाप भी कहते हैं साधु जिनका नाम है उनका भी मैं उद्धार करता हूँ। तो वो दुर्गति को पाये हुए किसी की सदगति कैसे कर सकते हैं?परंतु अहंकार बहुत है ना। बुड़–बुड़ करने लग पड़ते हैं। बाप कहते हैं यह शास्त्र आदि सब भक्तिमार्ग का भूसा है। ऐसे बहुत आते हैं। समझते हैं कि कृष्ण भगवान नहीं। शिव भगवान है। खुद कहते हैं कि हम जाकर अपने फालोवर्स को कहेंगे ;परंतु भक्त तो शिवभगवानोवाच्य मानेंगे नहीं। कहेंगे इनकी मत मारी गई है। इतनी बादशाही छोड़कर वो यहां थोड़े ही रहेंगे। यहां तो फिर कहा जावेगा कि झाड़ू लगाओ, यह करो, वो करो। वहां तो बड़े आराम से रहते हैं। खाते–पीते हैं। कितने ढेर सन्यासी,साधु भारत में हैं। उनकी भारत पर कृपा ही क्या है?कृपा तो बाप करते हैं ना। ड्रामा के अंदर पार्ट है। बाप कहते हैं मेरा पार्ट है ड्रामा के अंदर कि तुम बच्चों को .....से स्वर्ग का मालिक बनाना। अब यह तो बुद्धि में है ना। घूमो–फिरो ;परंतु बुद्धि में यही रखा कि हमको अब वापस जाना है। योगबल से ही पाप भस्म होंगे। तुम पवित्र बन जावेंगे। प्योरिटी तो अच्छी है ना। भारत में ही प्योरिटी ,पीस ,प्रासपर्टी सभी है। गुडनाइट।